भारतजनताऽहम्

माड्यूल 1/2

प्रस्तुतकर्ता-

रविकुमार जैन
प्र.स्ना.अध्यापक
(चयनमान)
हिंदी/संस्कृत
प.ऊ.के.वि.इंदौर

अभिमानधना विनयोपेता, शालीना भारतजनताऽहम्।
कुलिशादपि कठिना कुसुमादपि, सुकुमारा भारतजनताऽहम्॥

शब्दार्थ : अभिमान-स्वाभिमान,विनय-उपेता-नम्रता से भरी हुई,
शालीना-अच्छे गुणों वाली,भारतजनता-भारत की जनता,
कुलिशात्-वज्र से, कठिना-कठोर, सुकुमारा-अतीव कोमल।।

सरलार्थ:-स्वाभिमान रूपी धन वाली, विनम्रता से परिपूर्ण (भरी हुई), अच्छे स्वभाव वाली मैं भारत की जनता हूँ,वज्र से भी कठोर, फूल से भी अधिक कोमल मैं भारत की जनता हूँ।

निवसामि समस्ते संसारे, मन्ये च कुटुम्बं वसुन्धराम्।
प्रेयः श्रेयः च चिनोम्युभयम् ,सुविवेका भारतजनताऽहम्॥

शब्दार्थ-निवसामि-निवास करती हूँ,समस्ते-सारे, संसारे-संसार में, मन्ये-मानती हूँ, कुटुम्बम्-परिवार, प्रेयः-भौतिक सुख को, श्रेयः-आध्यात्मिक सुख को,चिनोमि-चुनती हूँ,उभयम्-दोनों को, सुविवेका-विवेकशीला।

सरलार्थः-मैं सारे संसार में निवास करती हूँ और पूरी धरती को परिवार मानती हूँ,भौतिक सुख और आध्यात्मिक सुख देने वाली दोनों प्रकार की वस्तुओं को चुनती हूँ,मैं विवेकशील भारत की जनता हूँ।

विज्ञानधनाऽहं ज्ञानधना, साहित्यकला-सङ्गीतपरा।
अध्यात्मसुधातटिनी-स्नानैः, परिपूता भारतजनताऽहम्॥

शब्दार्थ - विज्ञानधना-विज्ञान रूपी धन वाली, ज्ञानधना-ज्ञान रूपी धन वाली, परा-निपुण, अध्यात्म सुधातटिनी-अध्यात्म के अमृत की नदी (में),स्नानैः-स्नान करने से, परिपूता-पवित्र।

सरलार्थ -मैं विज्ञान रूपी धन वाली, ज्ञान रूपी धन वाली हूँ,मैं साहित्य, कला और संगीत में निपुण हूँ,मैं अध्यात्म रूपी अमृतमयी नदी में स्नान करने से पूर्ण पवित्र भारत की जनता हूँ।

मम गीतैर्मुग्धं समं जगत्, मम नृत्यैर्मुग्धं समं जगत्।।
मम काव्यैर्मुग्धं समं जगत्, रसभरिता भारतजनताऽहम्॥

शब्दार्थ - मम-मेरे, गीतैः-गीतों से, मुग्धम्-मोहित है, सममम्-सारा, जगत्-संसार, नृत्यैः-नृत्यों से, काव्यैः-कविताओं से, रसभरिता-रस से भरी हुई,

सरलार्थ-मेरे गीतों से सारा संसार मोहित है, मेरे नृत्यों से सारा संसार मोहित है,मेरे काव्यों (कविताओं) से सारा संसार मोहित है,मैं रस (आनन्द के रस) से भरी (परिपूर्ण) हुई भारत की जानता हूँ।